शिक्षक होने का मतलब

❑ विजय विशाल

कुछ बच्चे छोटे-से मैदान के एक कोने में खेल रहे हैं। कुछ पंक्तिबद्ध बैठे सामने रखे ब्लैक बोर्ड से नकल करके अपनी तख्तियों पर लिख रहे हैं । उनसे अलग हट कर कुछ बच्चे कक्षा के रूप में बैठे किताब पढ़ रहे हैं । मालूम नहीं वे पढ़ी जा रही बातों को समझ रहे हैं या सिर्फ रट्टा लगा कर याद कर रहे हैं ।

मैदान के एक कोने में गुरुजीनुमा एक व्यक्ति इस हलचल से निश्चंत बीड़ी फूंकने में एकाग्रता से लगा है । दूसरे कोने में एक अन्य गुरुजी हाथ में कैंची और कंघी लिए एक बच्चे के बाल काट रहे हैं । पास ही पानी की टंकी है। टंकी के पास तौलिया और साबुन पड़े हैं । बाल काटने वाले गुरुजी एक बच्चे का नाम पुकार कर उसे मुंह धोने के लिए प्रेरित कर रहे हैं । बच्चे का मुंह देख कर लगता है कि शायद ही उसने घर पर मुंह धोया हो । बच्चा लजाते हुए कुछ झिझक के साथ गुरुजी की ओर देखता है । मुंह धोने के लिए सहमत होता वह नहीं दिखाई देता ।

गुरुजी बाल काटना छोड़ कर उस बच्चे को पुचकारते हुए पानी की टंकी की ओर ले जाते हैं । फिर अपने हाथों से उसके चेहरे को धोने लगते हैं । बच्चा पहले कुनमुनाता है, फिर धीरे-धीरे स्वयं भी ठंडे पानी के छींटे मुंह पर मारने लगता है । गुरुजी साबुन हाथ में लेते हैं कि बच्चा आंखें भींच लेता है । उसे मालूम हो चुका है कि साबुन का झाग आंखों में जाने से जलन होती है । मुंह धोकर गुरुजी बच्चे का चेहरा तौलिए से पौंछते हैं और उसे हाथ-पांव रगड़-रगड़ कर साफ करने की हिदायत देकर पुन: बाल काटने में मशगूल हो जाते हैं ।

बीड़ी फूंकते दूसरे मास्टर जी तल्लीनता से अंतिम कश लगाकर बीड़ी का बचा हुआ टुकड़ा जमीन पर फैंकते हैं और पैर बढ़ा कर उसे मसल देते हैं । फिर बाल काटते गुरुजी की ओर टेढ़ी नजर से देख कर मुंह बिचकाते हैं । भीतर जलवाहक दोनों अध्यापकों के लिए चाय तैयार कर रहा है । मास्टर जी उसी ओर बढ़ जाते हैं । बीड़ी के बाद चाय की तलब बढ़ गई है ।

यह कोई काल्पनिक दृश्य नहीं है, बल्कि हिमाचल प्रदेश के सुदूर गांव में स्थित एक प्राइमरी पाठशाला का दृश्य है । बीड़ी पीने वाले मास्टर जी अधेड़ उम्र के हैं । नौकरी के प्रति उनमें कोई उमंग नहीं बची है । दिन काट रहे हैं । बाल काटते गुरुजी की यह पहली पोस्टिंग है । हाल ही में प्रशिक्षण पूरा किया है । जोश है । काम के प्रति उमंग है । जब मैं उनसे बातचीत करता हूं तो पाता हूं कि उन्हें अपने शिक्षक होने पर सचमुच गर्व है । अपने पेशे को लेकर कहीं हीन भावना देखने में नहीं आती । मैं मन ही मन दुआ करता हूं कि शिक्षक के रुप में उनकी यह भावना लगातार बनी रहे । नौजवान अध्यापक बताता है कि गांव में कोई हज्जाम नहीं है।

अधेड़ उम्र के अध्यापक इसे बेकार का प्रयास मानते हैं। अपने अनुभवों से वे कहते हैं कि लंबी नौकरी में उन्होंने बहुत कुछ करके देख लिया। यहां कुछ नहीं होने वाला । उन्हें अपने विभाग व समाज से अनेक शिकायतें हैं । वे उस दिन को कोसते हैं जब उन्होंने इस नौकरी में पदार्पण किया था । दो-तीन वर्षों में वे सेवानिवृत्त होने वाले हैं । शायद इसी पद से। बहुत हुआ तो शायद 'सैंटर हैड टीचर' हो जाएं। जबकि उनके सहपाठी जो पटवारी या जंगलात में गार्ड भर्ती हुए थे, आज उनसे अच्छी स्थिति में है ।

मैं उस नौजवान अध्यापक की ओर देखता हूं जिसमें अभी जोश है । उसकी भावनाओं की हृदय से कद्र करता हूं, यह जानते हुए भी कि बीमार सरकारी शिक्षातंत्र शीघ्र ही उसकी इन भावनाओं को निगल जाएगा । फिर कल्पना करता हूं कि कुछ वर्ष बाद पुन: जब भेंट होगी तो यह एक जोशीले शिक्षक की जगह दब्बू और मानसिक रूप से त्रस्त स्कूल मास्टर बन चुका होगा और सरकारी क्षेत्र में सामाजिक-आर्थिक रूप से सबसे निचले पायदान पर खड़ा होगा । स्कूल और विद्यार्थियों की चिंता से मुक्त, पारिवारिक चिंताओं से युक्त मनोदशा लिए। काश, मेरी यह कल्पना कभी सच न हो । ◆